२४३६

कूपप्रतिष्ठा पद्धतिः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्रीजगेशायनमः॥ ग्रथकूपप्र
तिष्ठाप्रारम्भः॥ उत्सर्जनपङ्कृत्यान्
सारेण॥ तत्रादौप्रथमदिनेनान्दी
मुखश्राद्धं कृत्वाऽथो दिनेनवग्र
हमण्डपंनिर्माय॥ वास्तुशस्थाप
नम्॥ नवग्रहाणांपूजनंचकु०॥
ग्रथमंपूर्वकृत्यंयजमानोभार्य्यापुत्रा
दिभिः सह॥ प्राङ्मुख उपविश्य॥ स्व
वामतः पत्नीपुत्रांश्चोपवेश्य॥ स
पवित्रपाणिराचम्य॥ प्राणान्नायम्य॥
पञ्चजव्यादिनाकूपमुद्धृत्य विधाय॥
स्वस्तिवाचनंकु०॥ तदनन्तरं प्र
तिज्ञासंकल्पंकु०॥ ग्रपवित्रेति
पठित्वा॥ देशकालंस्मृत्वा॥ ग्रमुके
जो ग्रोहं ग्रमुकशर्माहं ग्रस्तोहवा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सर्वपापक्षयपूर्वकस्वर्गलोकप्राप्त्या
नन्तानेककल्पव्यापिस्वर्गलोक
हर्षपराभूतियोवद्भिन्नमहस्तापः
प्रभृतिलोकाऽनासादितएतज्ज
लाशयस्थतोयबिंदुसंख्यावत्सं
वत्सरप्रतिदिवसनिर्वर्तितत्वा
तुरंगचतुर्वर्गफलदानजन्य
कामःकुपेऽस्मिन्देवकलासानि
ध्यर्थंप्रायःश्रीसर्वफलाद्याप्तसु
खकामःईश्वरप्रीतिकामोवाश्री
नृसिंहगायत्रीवरदानामंत्रवासं
त्राणंसपादलक्षंजप्यवासह
द्विषष्टीसहस्रसंख्याख्यज
पंकारयेतुंनृसिंहादिवरदानकर

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रणसमयेनिर्विघ्नतावृद्धि
न्नसर्वत्रहर्षानन्दजयफल
प्राप्त्यर्थंचप्रदोगणपत्याद्देवो
न्योपचारैरहंपूजयिष्ये॥
इतिसंकल्पः॥गणपतिःपूजनं
कु॰॥गणपतिःपूजनेलाम्बोदरी हो
मपद्धतिमेपत्र४सेपत्र८तकह
॥फेरपत्र्योक्तारपूजनमुपरंपू
जनकालायनीशुण्डिनीसेकरादेना॥
ततःजौर्ध्यादिषोडशमातृपूजनेल
ग्नादशमेपत्र२०परसेकरावणा॥
ततःकलशप्रतिष्ठायहलाम्बोद
रीमेपत्र११परहै३परसंपूर्णहुई॥
ततःवासुकीपूजनचतुःषष्टीयोगि
नीपूजनयहकालायनीशानिसे
करावणा ततःसप्तघृतवसुधारहोती

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पूजनम् । यक्षपूजनतश्चोदशी
मेपत्र १३ सेप्रारम्भ प० २ तक्
ततः स्नानविधानम् ॥ यक्षपूजन
कात्यायनीसेकसावणा ॥ ततः प्रा
चार्य वरणम् । कु० यक्षतश्चोदशी मे
पत्र १८ परह ॥ ततः प्रातिज्ञानाम्
वरणम् । कु० ॥ प्रथमन्नेतिपृष्ट्वा देशका
लसम्भव्य प्रभकगोत्रोत्थ प्रभकशर्मा
हंगृह्णीष्वासर्वपापक्षयपूर्वकरू
पूर्णायुरारोग्यधनधान्यसमृद्धिसुख
पुत्रपौत्रयशोवृद्धिदीर्घायुर्बलपुष्टि
प्रातथागमनानेकवाल्पव्यापिस्व
र्गलोकहर्षपरार्द्धयावद्भिन्नमि
क्षापः प्रदातिलोकाङ्गनासहि
तेनतज्ज्ञानाशयस्यतोयाविंदुसम
संख्यदेवसारूप्यदृढभक्तिवृद्धि
त्वचातुरंगचतुर्वर्णपुत्रीधान
जन्मकामः कुरुष्वसङ्कल्पकला

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagyan Sharada Peetham

सानिध्यार्थं आयुः श्रीसर्वफलाद्याप्यर्थं
स्वकामः इष्टवरप्राप्तिकामो वा कर्तव्य श्रीवि
घ्नराजो वरुणो मंत्रो वास्तु मंत्राणां सप्त
दत्तद्वा वासार्द्ध द्विषष्टीसहस्रसंख्याक
जपं कारयेत् तेनाभिः प्रासनकेसरैस्तु सा
काऽपूर्णजपस्थलीडोरिकादातृजीफलै
र्देभिः प्रमुक प्रमुक गोत्रान् प्रमुक
संख्याकान् ब्राह्मणान् प्रकल्पयेति विभक्ति
न्न प्रकल्पये॥ वरुणं कृत्वा जपसंकल्पं
कुर्यात् सर्वपूर्ववदुक्तं॥ सपादत्तद्वा वासार्द्ध
द्विषष्टीसहस्रसंख्याक जपं ब्राह्मणद्वारा प्र
कारयिष्ये॥१॥ ततः यजमानस्य ललाटे वंदन
माला॥ तिलकं चकुर्यात् ततः प्रार्थना॥ जयतु जयतु॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रतिप्रथमदिनकृत्यम्॥ प्रथमदिनकृत्य
माह "प्रथमंपञ्चजवेनकूपप्रोक्षणंकु०॥ त
तः मण्डपेसर्षपविकिरणम्॥ यहवेदितोऽष्ट
प्रतिष्ठाभेपत्र ४ पर है॥ ततःप्रथमंस्वस्तिवा
चनमुकृत्वा॥ प्रतिज्ञासंकल्पंकु०॥ प्रथविनेति
पठित्वा॥ देशकालंस्मृत्वा॥ प्रमुकगोत्रोऽहं प्रमु
कशर्माहं ऽमुकोऽहंवासर्वपापक्षयपूर्वकस्व
र्गलोकाद्यवाप्तये नमेऽसापः प्राप्तितिलोका
ऽन्नासहितएतज्जलाशयस्यतोयविंदुस
मसंख्यदेवसारूप्यप्राप्तिद्वारेणजितवु
तुरंगचतुर्वर्गपथ्वीप्राप्तिजन्यकामः कर्म
ऽस्मिन् देवकलासान्निध्यार्थंप्राचः श्रौसि
द्धिफलाद्यर्थंसुखकामःइक्षरप्रीतिकामोवा वृ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वास्तुमंडलप्रतिष्ठाप्रयोगः मंडपपूजनम्

पप्रतिष्ठांकरिष्येतदङ्गत्वेनतन्निर्विघ्नपरिस
माप्तिपूर्वकंप्रादौगणपत्यादिदेवान्यथोपचा
रैःपूजयिष्ये ॥ ततःगणपतिंपूजयेत् ॥
ततःपूर्ववत्पुनर्वस्त्रहाणांपूजनंकु० ॥ ततःध्वं
जापताकापूजनवंदरवात्तपूजनउत्सर्गपर्यं
तंमेपत्रपूर्वसेप्रारम्भकुर्वाहपत्रंतत्कसमाप्तं
सर्वतोभद्रमण्डलपूजनवास्तुहोमपर्यंतंमे
पत्र१४परहै ॥ वास्तुमण्डपपूजनउत्सर्गंपर्यंत
मेपत्र१०परहै ॥ मंडपपूजा ॥ सेपश्चात् ॥ कु
शण्डिकाप्रारम्भकुर्वा ॥ प्रथमंअग्निकापञ्चभू
संस्कारलघोदरीमेपत्र१२परहै ॥ औरकुशंडि
कालघोदरीमेपत्र१२सेप्रारम्भकुर्वाहकुशंडि
कावनस्रुवकर्मद्रुवीपर्यंतमेप० ३२परसमाप्तहै
हवनकेवरणकाचरुकासंकल्पकरकेफेरजो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रथम यात्रण मंडल का कलश के कर कूपको स्नान करावे इति ठरली कापी

नो हवनकरणो को लाग नावे ॥ और प्रा
चार्य्य जपोनसेरक्तवा पीतस्त्र
स्वकूपकोवेष्टनकरावे ॥ यह उस्त
र्गपद्धतिमेपत्र २० परलि० रक्तपी
तका प्रमाण ॥ और वास्तुशान्ति प्रयोग
मेंपत्र १५ वा १६ पर पावमानस्त्रो
और रक्षोघ्नस्त्रकालिखा है तिसर
क्तो से कूपको वेष्टनकरणा ॥ फेर कू
पको स्नानकरावेणा ॥ स्नानविधि ॥
उत्सर्गपद्धतिमेपत्रे ३२ परसे प्रारंभ
हुवाहै २५ परसमाप्त प्रथम ५ कलशों
नदीयोंका जलकुरुक्षेत्रादिकका ॥
गंगा जलयमुनाजलसरस्वतीकाज

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

लपावणा ॥ १ कूपोंका जलपावणा ॥
सर्वौषधीपावणी ॥ प्रभावे सतोवरी
॥ ओरपत्र ॥ ध्या ॥ १ सप्तमृत्तिका ४ चार
कलशांमेंपाकर के कूपको स्नान करावे
णा ॥ ओम् कुं ॥ कूपमेंवी जेरणा ॥ यह
वस्तु जो जेरणी लिखे है इनका प्रमाण की
उत्तमजपकृतिके पत्र ४ को ५ पर लिखे
है ॥ ओर दूवी पत्र पल्लव गंध पुष्प यह
सब जेरणो कूपमे ॥ ओर इसी पकृतिके पत्र
२१ पर गंगादि जलकूपमे मंत्र पढ करजो
२ रो लिखे है ॥ फेर पत्र २० पर मत्स्य कूर्म मकर
नाकु मिंडक शिशुमार जेरणो लिखे है पंच
२ नाजेरणा पत्र ११ पर लिखे है ॥ फेर यजमान
मको उत्तमजेपकृतिके पत्र १८ से तर्पणा करणा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

दानलिखाहै॥ फेर शय्यादानउत्सर्गपद्धतिमेंप०२२
परलि०है॥ फेर लघ्वोदरीपद्धतिमेंप०३३ पर दश
दिक्पालवस्तिःदेणीलि०है॥ फेर जपकीदक्षिणा
काहवनदक्षिणाकासंकल्पकरणा॥ फेरशेषव्यापद्
ज्ञानशक्तिस्थापकरद्कावांधणातिलककरण फेरइंद्रा
प्रदेण॥ फेरवाहिकोइनामदेण॥ फेरपुरोहित
को प्राक्षितकोदक्षिणादेणी॥ फेरछत्रापात्रदे
णा॥ प्रन्नदानतेलउडदतिलदानदेणा॥ फेरधेनु
दूतीदेणी॥ फेर प्रार्थनेककरण॥ फलघोष
सेपद्धतिमेंपत्र ३१ पर लिखाहैवैदिकपौराणिकी
मंत्रोंसे॥ फेरउत्सर्गपद्धतिमेंपत्र २०वा २१ पर
जलाशयोत्सर्गकरण दानकरण लिखाहै॥
यहजलाशयोत्सर्गकूपमेंकूर्मादिकजेरणेसेंप
ब्रह्मलोकवीउत्सर्गपद्धतिमेंपत्र २० पर लि०है॥
एण तृतीयेपब्रह्मलोलि०है॥ इतिकूपप्रतिष्ठास

मत्स्य
कूर्म
दिक
जेरणो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हवनके वरण का संकल्प लिखते है॥ >अपवि
त्रेतिपठित्वा देशकालंस्मृत्वा॥ >अमुक गोत्रोऽ
>अमुक शर्माऽहं गृहेवाकूपेऽस्मिन् देवकला
सान्निध्यार्थंश्रायुःश्रीसर्वफलाद्याप्तसुखका
दुक्षरश्रीतिकामोवा श्रीबलगणपत्रीकासुमंत्रव
रणमंत्राणांसुपादत्तदासंख्याख्यतयासाद्वि
सप्तीसहस्त्रसंख्याख्यजपानंतदशांशहवनत
दशांशतर्पणतदशांशमार्जनकरणार्थंतभिःको
द्रिकादीतद्भूजीफलादिभिः >अमुक गोत्रान्
>अमुकर संख्याकान्ब्राह्मणान् विभागवेनं
>अहंवृणे॥ वरणकरकरक्षाबांधदेणी ब्राह्मणो
नकेरतिलकरदेणा॥ फेरचरुकासंकल्प
कारणा॥ सर्वंपूर्ववदुक्त्वा॥ >अनेनचरुणा ब्राह्म
णद्वारा >अहंकारयिष्ये॥ यहहवनकेवरणकासंक
ल्पचेरुकासंकल्पेब्राह्मणहवनकरणेकाप्रारंभ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ब्राह्मणों के जपकोदक्षिणाकासंकल्प ॥ ॐ
पवित्रेतिपठित्वा देशकालंस्मृत्वा ॥ अमुकगो
त्रोऽहं ॥ अमुकशर्माहं जप्तोहंवाब्राह्मण द्वाराकारि
तानंऽश्री जलजापत्रीवसूर्णमंत्रवासाधुमंत्राणां
सपादलक्षवासार्द्धद्विषष्टीसहस्रसंख्यास्वजा
पसांग्यतासिद्ध्यर्थंइदंदक्षिणाद्रव्यंरजतमयंरु
द्रदैवतंयथानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योविभा
गशोनपातुमहमुत्सृजेत् ॥ ततःहवनदक्षिणा
संकल्पः सर्वपूर्ववत्पठित्वा ॥ अमुकगोत्रोऽहं ॥ अ
मुकशर्माहं जप्तोहंवा कूपप्रतिष्ठाहवनकर्मणः
प्रतिष्ठासांग्यतासिद्ध्यर्थंइदंदक्षिणाद्रव्यंयथानामगोत्रेभ्यो
ब्राह्मणेभ्योविभागशोनपातुमहमुत्सृजेत् ॥ ॥
कर्मकारुप्रतिष्ठाकराइकेदक्षिणाकासंकल्प ॥ सर्व
पूर्ववदुक्त्वा ॥ अमुकगोत्रोऽहं ॥ अमुकशर्माहं जप्तोहं
वा कूपयज्ञकर्मणः प्रतिष्ठासांग्यतासिद्ध्यर्थंइदं

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कूपके ४ दरवाजे करणे ॥ ८ कडुयां ८ वेले ८ कलश
शेष नालीयर टुलस्क घोड़ा सभके लोपर नालीयरें
परत्तपेटना ॥ फेर मध्यमे सर्वतोभद्र मंडल
करण ॥ फेर पाछे अग्नेषाड़ सामवारु पूजन करण ॥ एक कल
करण पूजन करण ॥ फेर नैऋत कोण मेंवा
स्तु मंडप करण ॥ फेर पश्चिम मेंत्रि कोण वि
वनकुण्ड करण ॥ प्रथम नवग्रह मंडप पूजा करणी
फेर ॥ सर्वतोभद्र मंडल पूजा करणी ॥ फेर ३ प्रतिष्ठा
स्थापन करण ॥ फेर वास्तु मंडप पूजा करणी
॥ फेर ध्वजा पताका रूपारोपण यज्ञ कृत्य करण ॥
सूत्र वेष्टनादि सभ कर्म करण ॥ यह प्रमाण अग्नि
तिष्ठा संग्रह ॥ प्रतिष्ठा प्रकाश ग्रंथो से देख कर
के लिखा है ॥ यह काम श्रेष्ठ है ॥ प्रासाद के वीचे
फेर कूपमे भस्म कूर्म
फेर कूपको स्नान करावण ॥ फेर कूपमे भस्म कूर्म
दिक जेरण ॥ पंचरत्न वी जेरण ॥ फेर तपेण ॥ फेर जोड़ा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कूपके ४ कोणों पर ५ केलेल जाधणे उपरचो दशांश एवढी वेदरवा लंबाव की और उंची बांधवे एणे प्रमाणे रक्तपीत पंचरंगी यांत्रे केलों जोडमा

>अथषोडशारचारणं मण्डलपूजनविधिः॥ प्र
थम कूपके समीप पश्चिमकी तरफको रेतीका वा
रण मण्डलकरणे हस्तमात्रका वा १२ गिहरा
का लम्बा चौडा करणे वा १२ गिहरा स्वेतकपंज
उसके उपर वस्त्र करके उसके उपर >प्रदी
तीका >प्रथवा >पाटेका रंगदार मण्डलकरणे
ना" कूपकी मण्डलाभिलाषकरके पश्चिमकी तरफ
मण्डलकरणे" फेर उत्सर्ग मथूषके पत्रद्वा
रसे उसका पूजनकरना" >प्रग्निस्थापनो नेर
>प्रग्निके पंचभूसंस्कारसे उपरतपूजन करणे
ना" सभमंडलोंकी पूजासे पृथक्पूजनकरना"
५ प्रथम गणेशजीको मंडलके उपर स्थान स्थाप
नकरके फेर पूजनकरणे" प्रथम स्वस्तिवाचनक
रना" फेर प्रतिज्ञासंकल्पकरना" देशकालं पठित्वा
>अमुकगोत्रोहं >अमुकशर्माहं गुप्तोहं वा कुपेऽस्मिन्नूदे
वकलासान्निध्यार्थंविघ्नराजदेवतामीप्सितंचारणं मण्डल
तपूजनमहंकरिष्ये तदङ्गत्वेन तन्निर्विघ्नपरिसमा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by eGangotri Sharada Peetham

मादि पूर्वक ग्रादौ गणपत्यादि देवान्यथोपचारैरर्चा
पूजयिष्ये ॥ प्रथमं गणपतिपूजनम् ॥ लम्बोदरी के पत्र
५ सेप्तक करदेना ॥ फेर उत्तर्ज मपूष के पत्र ६ पर लि
खाहै वारुण मण्डल मध्यस्थपद्मे ग्रहान् पूजयेत् यह
लिखाहै सोयह सूर्य्यादि ग्रह पूजन लम्बोदरी के पत्र
१२ पर से करा देना ॥ फेर दशदिक्पालों का ग्रावाहन
जान ग्रौर ग्रहों के ग्रधिदेव प्रत्यधिदेवताग्रों के पूजन उ
त्सर्ग मपूष के पत्र ६ पर से करा देना इसप्रकार वारु
ण मण्डल का पूजन करा करके फेर १ ताम्रपात्र मे
तप्त मे मत्स्य कूर्म्मादिका पाक करके स्थापन करके वारु
ण मण्डल के मध्य मे स्थापन करके उस का पूजन क
रणा लिखा उत्सर्ज मपूष मे पत्र १ पर फेर कूप को
स्नान करा करके गंगादि जलों को तीर्थ जलों को कूप मे
जोरके फेर मत्स्य कूर्म्मादिकों को मण्डल के मध्य मा जो
स्थापन करा रखे है उस को जल मे जोरणे कूप मे फे
र कूप को दशों दिशा मे खीर की वली पांदेणी उत्सर्ग मपूष मे
पत्र ८ पर सूर्य्यादिकों की नवग्रहों की वलि कों वी लिखि है वह

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

एक दंडक के थारो तरफ पत्र ८ पर लिखि छे " हवे
की वत्ति यांतो दण दिक पात्तो की वरु की मा मभक की
चारि देखी लि० छे " पत्र ८ पर उत्सर्ग पेहलो " फेर त
पण " जो दान शब्द दान जे तो उत्सर्ग कूणो तर्ग लि० छे "
प्रतेमा अभमत्यात् "

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

>प्रथम रूप प्रतिष्ठा सामग्री "प्रथम वर्ण सामग्री" नौ
दीप मुख आदु सामग्री तो नौ दीप मुख आदु मे सो लिख
लेनी "> प्राचार्य के वरण की सामग्री यह है" लोटा १
१ धोति जोडा "साफा १" पवी त्री १" जनेऊ १" जो मुखी १"
माला १" > प्रासन १" चंदन गट्टि १" जंत्री माला सूत वर्ण की
दूणी ला १ पुसाक पगडी छपटा गर खा कुरता" छत्री १" जोडा जु
तीयों का १" प्याली १" रुपये यथा शक्ति देणे" यह वरण तो >
आचार्य गुरु का है" > और ब्राह्मणों के जप करने वालों के वर
ण की सामग्री यह है" लोटे ४" धोति ४ > प्रासन ४ > जो
मुखी ४" माला ४" सापे ४" पवी त्री ४ चंदन गट्टि ४"
जनेऊ ४" यह वरण की सामग्री है" थाली पर कु
लश सारे" २२" कलश मट्टि के दु रुणे २५" केले नग २०
४ गज स्वेत मलमल खासा गठा मंडलों के वास्ते" २ स
फाता" १ गज खासा तो लम्बा चौडा सर्वतो भद्र के वास्ते"
१२ जी हरा लंबा चौडा वास्ते मंडल के वास्ते" १२ जी हरा
लंबा चौडा नवग्रहों के मंडल वास्ते" १२ गिहरा लंबा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

चौडावारुण मंडल के वास्ते ॥ इस भांत ४ गज कुवा
स्त्र स्वेत ॥ चांदनी नग ३ तीन मंडलों के उपर लाण
नी सर्वतोभद्रके ॥ वास्तु के ॥ नवग्रहों के ॥ २५ ऊडीयों
पीतरक्त हरित स्वेत कृष्ण ॥ चावल रंगणे २ सेर वा
२ ॥ सेर ॥ पीत ॥ रक्त ॥ हरित ॥ स्वेत ॥ कृष्ण ॥ चौभे ५० ॥ कडी
वां नग ८ ॥ टुल ४ गज रक्त ॥ ग्रोर टुल छोटा के ले
यडीयों के वास्ते न्यारी ॥ वाकि येरक्त ॥ १ ग्रोर ई पी
यानी चला पीले वा रक्त रंग का कारण स्त्र वे
ष्टन के वास्ते ॥ ८ शिशु भारना मच के का ले लो हे
के करने ॥ तांवे के पिंडक करने नग ८ ॥ चांदी के
भद्रपन नग ८ कछने सूवर्ण के नग ८ जो क
लोहे की नग ८ वा २० ॥ ना कु २ लोहे के करने ।
एक सँभ ६ हाथ का वा ३ हाथ का वा यजमान की
प्रमाण का करना गुल्लर का वा पीपल का करना
थान मे स्थापन करना उस के उपर टुल रक्त ले पे

सर्व की हवण के रखे कुण्ड मे रखी लिंग १ पं स्व र नो वेदी क ज ह पि ना मे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University; Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

इनी घोटा लपेटना ॥ १ ध्वजा करनी सर्वतोभद्रके मध्य में स्थापन करनी १ काष्ठकी रक्तकटु तेल उपरत्त पेटनी घोटा लगावणा सर्वतोभद्रके ऊपर ईशान की तरफ को स्थापन कर देणी वीत्ति है ॥ वंदरवाल ध्वजा की पुष्पों की करनी ॥ पञ्च गव्य पञ्चामृत ॥ पंचपल्लव १ मृत्तिका वंबी की १ गजके नी चे की ॥ जोगा ता की ॥ संगम की ॥ राजद्वार की ॥ प्रज्वके नी चे की ॥ तुलसी की डसमंत्र ॥ दूर्वा ॥ सर्वौषधी वासतावर ॥ कुरुचोत्रका जल ॥ १ कूपों का जल ॥ गंगा यमुना सरस्वती का जल ॥ जंघ पक्षादि ॥ वास्तु की सर्वरसी की मृत्तिका १ यथा शक्ति ॥ १ लोटा तांबे का वा पीतल का ॥ रेशमी वस्त्र पीत १ गज वास्तु की मृत्ति के वास्ते ॥ सवन के चरु का तोल सवा दत्त तोला का ॥ २० सेर तिल कच्चे ॥ १० सेर यव ॥ ५ सेर चावल ॥ ८ सेर घी ॥ १॥ सेर शक्कर ॥ यव तोल का चावल का पक्वान्न करते ॥ और एक दिन चे

CC-0. Lal Bahadur Shastri Jaffersity Delhi. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

लुभीजा नीचा न्यायवका श्रपा:॥ एक प्रमाणतोम
खडे॥ वहुत जगे पर॥ इसी प्रमाणसे यहांपर नी
ीकरते हे॥ यहांपर एकी तोलक चाकर ते हे॥
इसीतरफ ६२॥ का तोलकरना॥ १० सेर तिल
५ सेर रुपया॥ २॥ सेर चावल॥ ८ सेर घी॥ ३॥
सेर शकरा॥ इत्यवभो॥ जपत्र 7 की
मेवा के शेर ३ की कपूर 7 धूप 7 की
२५ सपारी॥ सर्वोषधी वासतावर॥
सहत कुंज 7 हलदी महदी सरवारि पंच
रंग॥ पानन ग पुंडीरि केना ले १५
कूपा छ दन वस्त्र स्वेत जिस मे
तारा कूप ठका जो वे कूप के प्रमाण लंबा चौडा

कटोरा छ पाषाणका 1 तेल उडद तिल सतनजा दानकरना॥
कूपा छादन प्रमाणवे दोक ट्टक वास्तुपकृति मे पत्र ३१ पर लिखे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

॥ प्रासमिधा॥ अर्क॥ पालाश॥ खदिर॥ अपामार्ग॥
अश्वत्थ॥ प्लक्ष॥ औदुम्बर॥ शमी॥ दूर्वा॥ कुशा॥
शाक्ष्य॥ समिधः॥ क्रमात्॥ ॥ श्लोक १ ठा
क॥ २ खैर॥ ३ उंगा॥ ४ पिप्पल॥ ५ जल्ल॥ ६
जाडी॥ ७ दूर्वा॥ ८ कुशा॥ ९॥ यह नवग्र
हों की समिधा॥ १० ८ पिप्पल॥
की १० ८ जल्ल॥ की॥ उडुंबर की छाल
की पाठी॥ २ छटांक॥ १ कुजी खीर की
१ कुजी मीठे बावलो की॥ वस्त्र यो
के वास्ते॥ १००॥ टंको॥ शिल्पी की पूजा
के वास्ते॥ १००॥ टंको॥ पुरोहित को॥
दक्षिणा॥ १ जो दान दे॥
शय्या को शय्या १ देणी॥ १ जो दान दे॥
शय्या की सामग्री १ मंजी १ रजाई १ चद्दर १ वरण॥ १ तकीया
झाड़ा के पड़वा॥ १ स्त्री १ छत्री वस्त्र न पवो १ छत्र
१ छड़ी॥ १ पंखा खड़ा ऊ वा॥ यह सामग्री
जोड़ी १ दर्पण॥ १ ॥ १ लोटा १ कटोरा १ गजट ल
१ ता ती पुष्प धूप गंध॥ अदात यह जो सामग्री
यह सामग्री जो बड़ी है मंडलो मध्ये॥ प्रतम

© Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

साधारण सामग्री विनासवेतां
ग्रहि वकेथा है "प्रथम दशन्नो
नवग्रहोंका मंडप करणा ॥१ हवन
कासंडल करणा ॥ जो कुंमें डल
करे तो नैऋत मे करणा ॥
ओर कूपके समीप मे १ वास्तु मं
डल करणा ॥ ओर कूपकी दोहो
दिशामें के तोलग वेने उनके कंठ
ल सूतक बांधणी छोटा लपेट देना ॥
ढक्कन एक नालीयर ले लपेट कर
केलों की नीचे रख देने चववोने ने
ढक्का जोकर देने कूपको वास्तु
मंडल तरफ कूपके ओर केलों
के समीप मे ही हाथका १२ गिरफका
लंबा चौडा करके नीउस के उपर स्वेत
वस्त्र का सात गांठ का १२ गिरह लंबा चौडा
बंधन देना ४ खोभे जाड देने के रंग का तुन

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarayaga Shivaji Foundation

उत्सर्गपद्धतिमेव कुर्यात् पुष्पं क्षिपेत्वा
वर्मकृत्वा॥ प्रतिष्ठासकः पंचकुं० तत्रः
पञ्चगव्यादिना कूपशुद्धिं कृत्वा॥ गा
णपतिः पूजनम् कुं० यह पूजन कर
के आचार्य पूजन कर के प्रार्थना कर
पत्रि पत्र उतीन पर से॥ फेर षोडशमातृ
कोजन वी पत्र उपर कै यह षोडशमातृ पूजन
न्ने कर के नांदीश्राद्ध करण जो न्ने
ही कर ते षोडशमातृ पूजन वे सोधीश
वेक कर देण॥ प्राकाप्यवरणकरण्य
पत्र ४ पर से करण॥ तथैवन्नलावरणपत्र
४ पर से करण॥ तथैवन्नचिञ्जावरणम्
पत्र ४ पर से करण॥ ततः पश्चिमद्वारेण
प्रविश्य॥ पश्चिमद्वार मे प्रवेश होकर॥ फे
र दोध्र मंत्र से जौर सर्षप मंडप
चारों मे दिक्किरण करण॥ पत्र ४ पर से
ततः कौ पंचगव्येन पुनः सर्वत्र प्रोक्षे
त् प्रणवेनेष्टि मंत्रेण॥ पत्र ४ पर से॥

रक्षो घ्न मंत्र का लक्षण तिसे पत्र १६ पर से

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

प्रथम नवग्रह मंडप पूजन फेरु सर्व

उत्सर्ग पद्धति मे पत्र पूर्व से मंडप पू-
जन कुर्यात् "पद्म लिखाहै" पत्र पर से इस
त्रत के मंडपों की वा ह्यू जा लिखि
पताको वंदरवाल ध्वजा कुंभ की पूजा श्री
दक्षणी शो मेरवीर की वलियां देणी ॥ पत्र ६
पर इति मंडप प्रतिष्ठा समाप्ता" पद्म वा ह्यू
जा समाप्तु ई ॥ प० ६ पर वा सुपूजन लि० ह ॥
प० १० पर समाप्त ॥ फेर वास्ते मंडल पूजन क
रना ॥ पत्र १० पर प्रमाण है" पूजन ई स मंडल का
उत्सर्ग प्रकरण मे पत्र ६ पर है" नवग्रह मंडल पूज
जा उत्सर्ग पद्धति मे पत्र ११ पर से प्रारंभ हुवा है
पत्र १५ तक "अधिदेव प्रत्याधिदेव पूजन सम-
माप्त हो गया" फेर उसी पत्र १५ पर से सर्व
दिशा हो की वलियां मंडप के समीप मे देणी
लि० ह ॥ इति ग्रह मंडल पूजा समाप्ता ॥ को-
ष्ण पक्ष के देवता उत्सर्ग पद्धति मे वी पत्र १५
पर लिखे है स्यापु नकर एो पूजन सहित वी मंड
पर लिखे है स्यापन कर एो लि० ह ॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri Univ. Delhi. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

कूपस्नानपत्र २२ पर लिं० है॥
२३ पत्र १५ पर कूपशांति का प्रारंभ हुवा है॥ पं० १६
पर समाप्त॥ फेर दशदिक्पाल वलिघो
पूर्णपात्र संकल्प यह सात पत्र १८ पर
लिखेछ॥ फेर पत्र १९ पर कूपारोपण॥
विधि लिं० है॥ फेर जो दानपत्र १८ पर
से करण लिं० है॥ उसी पत्र १८ से जो कुछ दान
कर्तव्य करण लिं० है करण॥ फेर पत्र २० पर से
पीतवस्त्र से कूपास्त्राम को वेष्टन क
रण लिं० है॥ उसी २० के पत्र पर कूर्म का छ
वे जल मकूप के जे० रण लिं० है॥ फेर पत्र
जलाशये सर्ज करण लिं० है॥ फेर
त्र २१ पर जाती सर्व कुंड वेदी
और १ कूपों का जल कूप मे जे० रण लिं०
॥ फेर पत्र २२ पर शुद्धा दी लिं० है॥ दोदस
भक्त लिं० है॥ फेर पत्र २३ पर पूर्णाहुति॥ प्रभि षे
क करण लिं० है॥ पं० २४।२५ पर सभा पढ़ने योग्य पद्य
है॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham